कथा सरिता

रात और दिन का भेद

एक महात्मा रात-दिन एक जंगल में साधना करते रहते थें। एक दिन उस राज्य का राजा उस जंगल में कहीं से घूमता हुआ पहुंचा। एक निर्जन स्थान पर महात्मा को भक्ति में लीन देखकर वह सोचने लगा कि यह आखिर कैसे गर्मी, सर्दी, बरसात और हर तरह के कष्ट सहते हुए अपने लक्ष्य को साधने में लगे हुए हैं? यह सोचकर उसने अपने मंत्री को आदेश दिया कि वह इस बात का पता लगाएं कि सर्दी में महात्मा जी की रात कैसी बीतती है। मंत्री महात्मा जी के पास पहुंचा। उसने प्रश्न किया, मुनिवर, मेरे महाराज जानना चाहते हैं कि इस सर्दी में आपकी रात कैसी गुजरती है? महात्मा बोले, वत्स, मेरी रात तो कुछ आप जैसी ही कटती है, पर दिन आपसे अच्छा गुजरता है। मंत्री ने राजा को यह बात बताई तो राजा अचरज में पड़ गया। उसने स्वयं महात्मा के पास जाने का निर्णय किया। उसने महात्मा के चरण स्पर्श करके निवेदन किया, महात्मन, मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि सर्दी में आपकी रात कैसी गुजरती है? महात्मा ने मुस्कराकर कहा, मेरी रात कुछ आप जैसी ही गुजरती है पर दिन आपसे अच्छा कटता है। राजा ने फिर पूछा, मैं आपके इस रहस्यपूर्ण उत्तर को नहीं समझ पा रहा हूँ। इसे स्पष्ट करें। महात्मा जी ने कहा, जब रात में मैं और आप गहन निंद्रा में होते हैं तो वह रात आप जैसी ही बीतती है क्योंकि निंद्रा देवी की गोद में सोय हुए हर मानव की स्थिति एक समान होती है। किंतु जब मैं और आप जागृत अवस्था में होते हैं, तब आप तो अपने बुरे-भले कामों में व्यस्त रहते हैं, जबकि मैं उस समय भी परमपिता परमात्मा का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता रहता हूँ। इसलिए मेरा जागृत समय आपसे कहीं ज्यादा फलदायक होता है। इसी कारण मैंने कहा कि रात आप जैसी गुजरती है पर दिन आपसे अच्छा गुजरता है।

जरूरतमंद को मदद

एक बार बेंजामिन फ्रैंकलिन ने एक धनी व्यक्ति की मेज पर कुछ सिक्के रखते हुए कहा, आपने बुरे समय में जो सहायता की थी, मैं उसके लिए बहुत आभारी हूँ। पर जब मैं अपनी मेहनत से इतना सक्षम हो गया हूँ कि आपका कर्ज वापस कर सकूं। मैं यह सिक्के आपको वापस करने आया हूँ। बेंजामिन फ्रैंकलिन की बात सुनकर वह सज्जन उन्हें घूरते हुए बोले, क्षमा करिए, पर मैंने आपको पहचाना नहीं। न ही मुझे यह याद है कि मैंने किसी को उधार दिया था। बेंजामिन ने कहा, मैं उन दिनों एक प्रेस में अखबार छापने का काम करता था। एक दिन अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई तब मैंने आपसे बीस डॉलर लिए थे। यह सुनकर उस व्यक्ति ने अपने बीते दिनों को याद किया तो उन्हें स्मरण हो आया कि एक बालक प्रेस में काम करता था और एक दिन उसके बीमार होने पर उन्होंने उसकी मदद की थी। यह याद आने पर उस व्यक्ति ने कहा, हाँ, मुझे याद आ गया। लेकिन दोस्त, यह तो मनुष्य का सहज धर्म है कि वह आपत्तिग्रस्त व्यक्ति की सहायता करे। इन सिक्कों को आप अपने पास ही रखें और कभी कोई जरूरतमंद व्यक्ति आपकी नजरों में आएं, तो उसे दे दीजिएगा। इस बात से बेंजामिन बहुत प्रभावित हुए और उन्हें नमस्कार कर वे सिक्के वापस अपने साथ ले आए। इसके बाद उन्होंने एक जरूरतमंद युवक को वे सिक्के दिए। जब उस युवक ने सिक्के लौटाने चाहे तो बेंजामिन ने कहा, दोस्त, जब तुम सक्षम हो जाओगे तो अपने जैसे किसी जरूरतमंद को ये सिक्के दे देना। मैं समझूंगा कि मेरे पैसे मुझे मिल गए। वह युवक बोला, मैं ऐसा ही करूंगा। इसके बाद बेंजामिन उस युवक के कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, किसी जरूरतमंद की वक्त पर मदद करना ही इंसानियत है। अगर हम किसी की मदद करते हैं तो वह मदद सौ गुना अधिक होकर हमारे पास वापस आती है और हमें कामयाब बनाती है।

लाभ या हानि

विश्व के सर्वश्रेष्ठ वायलिन निर्माता स्ट्रेडिवरी को एक वायलिन के बनाने में दो माह का समय लगता था, जबकि उनके प्रतिस्पर्द्धियों को वायलिन बनाने में केवल सात-आठ दिन ही लगते थे। एक दिन उनके मित्र ने पूछा -'आप तो विश्व विख्यात वायलिन निर्माता हैं, फिर भी आप अन्य कलाकारों से भी जल्दी वायलिन बना-बनाकर बचे सकते हैं, इससे आपको आर्थिक लाभ ही न होगा, वरन् संगीतकारों को अधिक समय तक प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी।' स्ट्रेडिवरी ने जवाब दिया -'आर्थिक लाभ के सम्बन्ध में तो भली-भाँति मैं नहीं कह सकता, पर इतना अवश्य जानता हूँ कि जल्दबाजी में किया गया कार्य अधूरा ही रहता है।

मैं अपने लाभ से अधिक महत्व क्रेताओं की लाभ-हानि को देता हूँ, क्योंकि जल्दबाजी में बनाए वायलिन उन्हें पूरा आनंद न दे सकेंगे।'

सुशासन

आचार्य, सुशासन का लक्षण क्या है? चीनी संत चांग-चुआंग से उनके एक शिष्य ने पूछा। जिस देश का शासक शक्ति संपन्न हो, वहीं सुशासन संभव है। चांग चुआंग ने जवाब दिया। लेकिन शासन शक्ति संपन्न कैसे होगा? शिष्य ने प्रतिप्रश्न किया। आचार्य ने जवाब दिया - इसके लिए तीन बातें आवश्यक हैं। पहली, प्रजा को खाद्यान्न का अभाव महसूस नहीं हो। दूसरी, सेना को हथियारों की कमी नहीं खटके। तीसरी, प्रजा शासन और शासक पर अटूट विश्वास रखे। ऐसा शासन हिलाएं नहीं हिलेगा और डुलाए नहीं डुलेगा। शिष्य ने फिर सवाल किया - अच्छा गुरुजी यह बताएं कि इन तीनों में से किसी एक को छोड़ना ही पड़े, तो किसे छोड़ा जाए? आचार्य ने कहा, हथियारों का त्याग किया जा सकता है। फिर बचे दो में भी यदि किसी को छोड़ना पड़े तो? आचार्य ने जवाब दिया - तब खाद्यान्न को त्यागा जा सकता है। खाद्यान्न को क्यों छोड़ा जाए। आचार्य बोले - इसलिए कि आदमी की मृत्यु निश्चित है। उससे आदमी पार नहीं पा सकता। खाद्यान्न के अभाव में कुछ लोग भूखे मर भी जाएं, तो इससे कुछ बनने या बिगड़ने वाला नहीं है। पर प्रजा का भरोसा टूट जाएं, तो शासन स्थिर नहीं रह सकता। उसका विनाश हो जायेगा। तो फिर शासन का लक्ष्य क्या हो? शिष्य ने पूछा। आचार्य ने कहा - शासन का लक्ष्य प्रजा के हित को छोड़ और कुछ हो ही नहीं सकता। प्रजा को सुखी देखना ही शासन और शासक का लक्ष्य होना चाहिए।

उसे हमेशा स्मरण रखना चाहिए कि शासन जनहित के लिए है, न कि मौज-मस्ती करने के लिए। आचार्य की बात सुनकर शिष्य को समझ में आ गया कि सुखी प्रजा ही सफल शासन की निशानी है।

मेहनत की कमाई

काशी में एक कर्मकांडी पंडित का आश्रम था, जिसके सामने एक जूते गांठने वाला बैठता था। वह जूतों की मरम्मत करते समय कोई न कोई भजन जरूर गाता था। लेकिन पंडित जी का ध्यान कभी उसके भजन की तरफ नहीं गया था। एक बार पंडित जी बीमार पड़ गए और उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। उस समय उन्हें वे भजन सुनाई पड़े। उनका मन रोग की तरफ से हटकर भजनों की तरफ चला गया। धीरे-धीरे उन्हें महसूस हुआ कि जूते गांठने वाले के भजन सुनते-सुनते उनका दर्द कम हो रहा है। एक दिन एक शिष्य को भेजकर उन्होंने उसे बुलाया और कहा, भाई तुम तो बहुत अच्छा गाते हो। मेरा रोग बड़े-बड़े वैद्यों के इलाज से ठीक नहीं हो रहा था, लेकिन तुम्हारे भजन सुनकर मैं ठीक होने लगा हूँ। फिर उन्होंने उसे सौ रुपए देते हुए कहा, तुम इसी तरह गाते रहना। रुपए पाकर जूते गांठने वाला बहुत खुश हुआ। लेकिन पैसा पाने के बाद से उसका मन काम-काज से हटने लगा। वह भजन गाना भूल गया। दिन-रात यही सोचने लगा कि रुपए को कहां संभालकर रखे। काम में लापरवाही के कारण उसके ग्राहक भी उस पर गुस्सा करने लगे। धीरे-धीरे उसकी दुकानदारी चौपट होने लगी। उधर भजन बंद होने से पंडित जी का ध्यान फिर रोग की तरफ जाने लगा। उनकी हालत फिर बिगड़ने लगी। एक दिन अचानक जूते गांठने वाला पंडित जी के पास पहुंचकर बोला, आप अपना पैसा रख लीजिए। पंडित जी ने पूछा, क्यों, क्या किसी ने कुछ कहा तुमसे? जूते गांठने वाला बोला, कहा तो नहीं, लेकिन इस पैसे को अपने पास रखूंगा तो आपकी तरह मैं भी बिस्तर पकड़ लूंगा। इसी रुपए ने मेरा जीना मुश्किल कर दिया है। मेरा गाना भी छूट गया। काम में मन नहीं लगता, इसलिए कामकाज ठप हो गया।

मैं समझ गया कि अपनी मेहनत की कमाई में जो सुख है, वह पराये धन में नहीं है। आपके धन ने तो परमात्मा से भी नाता तुड़वा दिया।

आबू रोड। शांतिवन के ब्र.कु.मोहन को 'लौह पुरुष' का अवार्ड प्रदान करते हुए राजस्थान के खेल मंत्री मांगेलाल ग्रसिया, पूर्व सांसद आनन्द तथा नगरपालिका अध्यक्ष लीला देवी।

अशोक नगर, धुलिया। माउण्ट आबू के ब्र.कु.सूर्य का अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.प्रमिला तथा ब्र.कु.कमल।

पाटण, सतारा। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए माउण्ट आबू के ब्र.कु.शशिकांत, अमरसिंह पाटणकर, प्राचार्य शेवाले तथा अन्य।

खानपुर, राजस्थान। शहर के गणमान्य नागरीक के साथ 'जीवन में सफलता के सूत्र' विषय पर ज्ञान परिचर्चा करते हुए ब्र.कु.तपस्विनी, सरपंच जेहरा बानो तथा अन्य।

जवहार। राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के विद्यार्थी, ब्र.कु.काश्मीरा, ब्र.कु.किरण तथा अन्य।

असन्ध। महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी महाराज से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कविता तथा साथ में हैं ब्र.कु.उषा।